लॉक का सरल तथा जटिल प्रत्यय (अन्तिम भाग)

Simple and Complex Ideas of Locke (Final Part)

⟹ पिछले भाग में हमलोगों ने मिश्रित प्रत्यय पर चर्चा कर रहें थे जिसमें हमने पदार्थ के तीन प्रकारों में से प्रथम प्रकार जड़ पदार्थ पर चर्चा किये। अब हमलोग उससे आगे की चर्चा इस भाग में करेंगे।

(ख) मनस् अथवा आत्मा — लॉक ने बताया है कि जड़ पदार्थ का ज्ञान संवेदनाओं से होता है पर आत्मा का ज्ञान स्वसंवेदना से होता है। उन्होंने कहा है कि यदि हम अन्तर्निरीक्षण करें तो हमें कुछ आन्तरिक तथ्यों का जैसे सुख, दु:ख, शंका, कल्पना इत्यादि का बोध होता है। पर यदि गुणों का आधार द्रव्य या पदार्थ है तो पूछा जा सकता है कि इन आन्तरिक अनुभूतियों का आधार क्या है? निश्चय ही इन आन्तरिक अनुभूतियों का आधार जड़ पदार्थों को नहीं माना जा सकता पर साथ ही जिस प्रकार रंग, गंध इत्यादि का आधार जड़ पदार्थ है उसी प्रकार इनका भी कुछ न कुछ आधार अवश्य

होगा। चिन्तन एक क्रिया है और इसलिए हर क्रिया की भाँति इस क्रिया का भी कोई न कोई कर्ता अवश्य होगा। लॉक के अनुसार यह कर्ता या आधार मनस या आत्मा है। सौन्दर्य में कई प्रकार के स्तर का प्रत्यय निहित होते हैं पर इस सौन्दर्य-बोध से हमारे मन में एक प्रकार के आनन्द की अनुभूति होती है, अतः इस अनुभूति का कुछ आधार अवश्य होगा। लॉक के अनुसार यह आधार ही हमारी आत्मा है। अतः स्पष्ट है कि जिस प्रकार भौतिक गुणों का आधार जड़ पदार्थ है उसी प्रकार आन्तरिक अनुभूतियों के आधार रूप में आत्म पदार्थ के अस्तित्व को मानना आवश्यक है। सिद्ध है कि आत्मा का अस्तित्व है।

(ग) ईश्वर पदार्थ — लॉक ने कहा है कि जिस प्रकार अनुमान के आधार पर आत्म पदार्थ का बोध अथवा ज्ञान होता है उसी प्रकार ईश्वर भी अनुमान का विषय है। गुलाब को या सौन्दर्य को देखने से आनन्द की अनुभूति होती है और इस आनन्द का अनुभवकर्ता हमारी आत्मा है। इसी प्रकार लॉक के अनुसार हम लोगों को अनन्त देश और अनन्त काल का ज्ञान होता है और इसका निर्माता भी कोई सीमित सत्ता नहीं हो सकती। अतः यह पूछा जा सकता है कि अनन्त देश ~~और अनन्त~~ और काल का निर्माता कौन

Date 30/05/20
Page 3

है? इतना ही नहीं लॉक के अनुसार सम्पूर्ण प्रकृति अथवा विश्व प्रयोजनात्मक है। पर इस विशाल प्रकृति मे निहित प्रयोजन का कारण किसी सीमित सत्ता को नहीं माना जा सकता अर्थात इनका कारण कोई अनन्त और असीमित सत्ता ही हो सकती है। लॉक के अनुसार वह सत्ता ईश्वर है।

(3) सम्बन्ध — मिश्रित प्रत्यय का तीसरा रूप सम्बन्ध है। लॉक ने कहा है कि मानव मन स्वयं ही इन मिश्रित प्रत्यय अर्थात सम्बन्ध का अनुमान कर लेता है। जब संवेदना और स्व-संवेदना के आधार पर हमें प्रत्ययों की प्राप्ति होती है तो हम उन प्रत्ययों की तुलना करते है और इससे ही हमें सम्बन्ध का ज्ञान होता है। लॉक ने सम्बन्ध के कई रूपों की व्याख्या की है जैसे दिक-काल का सम्बन्ध, नैतिक संबन्ध एवं कारण-कार्य सम्बन्ध तथा तादात्म-विरोध सम्बन्ध इत्यादि। परन्तु सम्बंध के इन विविध रूपों मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण-कार्य सम्बन्ध तथा तादात्म और विरोध का सम्बंध है।

प्रकृति में हमलोग सदा ही परिवर्तन का अनुभव करते है और लॉक के अनुसार इन परिवर्तन के मूल में कारण-कार्य का सम्बन्ध है जिसका साक्षात् ज्ञान नहीं होगा बल्कि हमें

अनुमान द्वारा इसका बोध होता है। उदाहरण के लिए बादलों के एकत्रित होने पर बारिश होती है, यह हमारा एक अनुभव है जिसे हम बार-बार अनुभव करते हैं और इसलिए बादल और बारिश के बीच कारणता रूपी आवश्यक सम्बन्ध को मान लेते हैं। लॉक ने कहा है कि यथार्थ में हमें यहाँ पर केवल बादल और बारिश नामक दो प्रत्ययों का ही बोध होता है और परिवर्तित चेतना को देख कर ही कारणता रूपी आवश्यक सम्बन्ध का ज्ञान होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि लॉक ने मिश्रित प्रत्ययों के तीन रूपों को माना है जिन्हें विकार, पदार्थ या द्रव्य तथा सम्बन्ध कहा है।

मूल्यांकन —— लॉक के प्रत्यय सिद्धान्त पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि उनके विचारों में कई प्रकार की असंगतियाँ निहित है। इस सम्बन्ध में सबसे पहली बात यह कही जा सकती है कि लॉक की यह धारणा पूर्णतः अमान्य है कि सरल प्रत्ययों को ग्रहण करते समय मानव मन पूर्णतः निष्क्रिय रहता है और बाद में उन सरल प्रत्ययों से मिश्रित प्रत्ययों की रचना में वह क्रियाशील हो जाता है। मनोविज्ञान जो

मूल रूप से मानसिक और शारीरिक व्यवहारों का अध्ययन करता है, यह बताता है कि मन कभी भी निष्क्रिय नहीं रहता। सारांश यह है कि मन सदा ही क्रियाशील रहता है और इसलिए लॉक की यह धारणा कि सरल प्रत्ययों को ग्रहण करते समय मन निष्क्रिय रहता है, पूर्णतः निराधार और असंगत है।

फिर यदि तर्क के लिए लॉक की इस धारणा को स्वीकार भी कर लिया जाय कि मन सरल प्रत्ययों को ग्रहण करने समय निष्क्रिय रहता है तो हमें यह भी मानना होगा कि वह स्वयं ही कभी भी सक्रिय नहीं हो सकता। यदि मन भी सरल प्रत्ययों को ग्रहण करते समय निष्क्रिय रहता है, जैसा कि लॉक ने माना है तो फिर मिश्रित प्रत्ययों की रचना में वह स्वयं ही बिना किसी बाहरी शक्ति के सक्रिय कैसे हो जाता है. लॉक इस बात को स्पष्ट नहीं कर पाते।

यद्यपि लॉक उपरोक्त समस्या का समाधान नहीं दे पाते परन्तु वे इतना अवश्य मानते हैं कि मन एक शक्ति है। क्योंकि जन्मजात प्रत्ययों के खण्डन के सिलसिले में उन्होंने कहा है कि मैं किसी भी जन्मजात प्रत्यय की ~~सत्यता~~ सत्यता नहीं मानता पर जन्मजात ~~मा~~ मानसिक शक्ति को मानता हूँ।

स्पष्ट है कि लॉक मन को एक शक्ति मानते है। परन्तु लॉक का मन को एक शक्ति मानना एक दूसरी समस्या खड़ी कर देता है। मन ~~निष्क्रिय~~ निष्क्रिय है और वह एक शक्ति है, ऐसा कैसे माना जा सकता है? क्या हमलोग यह स्वीकार करलें कि शक्ति निष्क्रिय होती है? शक्ति का अर्थ ही सक्रियता है। अतः मन को या तो निष्क्रिय माना जा सकता है या एक शक्ति, दोनो को साथ-साथ स्वीकार नहीं किया जा सकता। पर लॉक ने दोनो को साथ-साथ माना है।

सारांश यह है कि यदि गौण गुणों का अर्थ गुणों का ज्ञाता होना है जैसा लॉक का मत है तो किसी भी गुण को सही अर्थों में ~~सापेक्ष~~ ~~नहीं~~ ~~कहा~~ निरपेक्ष नहीं कहा जा सकता।

उपरोक्त असंगतियों के आधार पर हम कह सकते है कि लॉक का प्रत्यय सिद्धान्त कई दृष्टि से अमान्य है।

Dr. Md. Arshad. Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College
V.K.S.U, Ara.